Indian Traditional Textiles (IIIrd periodical)

Max. Marks: 15
1 Hrs

TD-205

Q1. कॉंचीपुरम साड़ी को विस्तार से समझाइये [9]

25

कांचीवरम साड़ी
(Kanchivaram Sari)

भारत के दक्षिण में समुद्र तट पर स्थित तमिलनाडु राज्य का मुख्य उद्योग मछली पकड़ना और खेती करना है। वस्त्र का उत्पादन यहाँ कुटीर उद्योग के रूप में प्रचलित है। तमिलनाडु अपनी अनेक सुन्दर साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। इनमें कांचीपुरम का विशिष्ट स्थान है। कांचीपुरम की हाथ से बुनी सिल्क साड़ी पूरे भारत में प्रसिद्ध है। पहले दक्षिण भारत के अधिकांश परिवारों में बुनकर हुआ करते थे जो कि त्योहारों, विवाह और विशेष पर्वों पर साड़ी व कपड़ों की आवश्यकता की पूर्ति स्वयं कर लेते थे।

इतिहास-थोंडायमण्डलम क्षेत्र की राजधानी के रूप में कांचीपुरम पल्लव राज्य की शोभा बढ़ाता था। यह चोल एवं विजयनगर के राज्यकाल में शिखर पर था। आज से लगभग चार सौ वर्ष पूर्व राजा कृष्णदेव राय का शासन था जो कि कला प्रेमी थे। इनके समय में बुनकर समुदाय (देवांग और शालीगर) कांचीपुरम आकर बस गये।

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि दूसरी सदी में कावेरीपूमपट्टिनम् के समुद्र में डूबने से बुनकर कांचीपुरम आकर बसे। 1891 में मद्रास जनगणना रिकॉर्ड के अनुसार बुनकरों ने चोल वंश के राजा, राय प्रथम के बुलाने पर इस कला की शुरुआत की।[1]

फॉर्ब्स वाट्सन नामक एजेन्ट ने सन् 1871 में जारी सूची में तमिलनाडु की सिल्क साड़ियों के उत्पादन में कांचीवरम साड़ी का उल्लेख नहीं किया। सर जार्ज वाट्ट[2] ने कांचीवरम साड़ी को नहीं लिया। एडॅगर थर्स्टन ने भी मद्रास शहर की सिल्क बुनाई का ही वर्णन किया है।[3]

बीसवीं सदी के शुरुआत में कुम्बाकोणम्, तंजौर, सेलम अपनी कला के लिए प्रसिद्ध थे लेकिन अल्पकाल में ही कांचीपुरम सिल्क बुनाई के महत्त्वपूर्ण केन्द्र के रूप में जाना जाने लगा। कांचीपुरम ही मद्रास क्षेत्र का एकमात्र कस्बा था जिसमें पाँच हजार करघे और पन्द्रह हजार बुनकर कार्यरत थे।[4] इससे यहाँ सिल्क साड़ी उद्योग की विशालता का आभास होता है।

Scanned by CamScanner

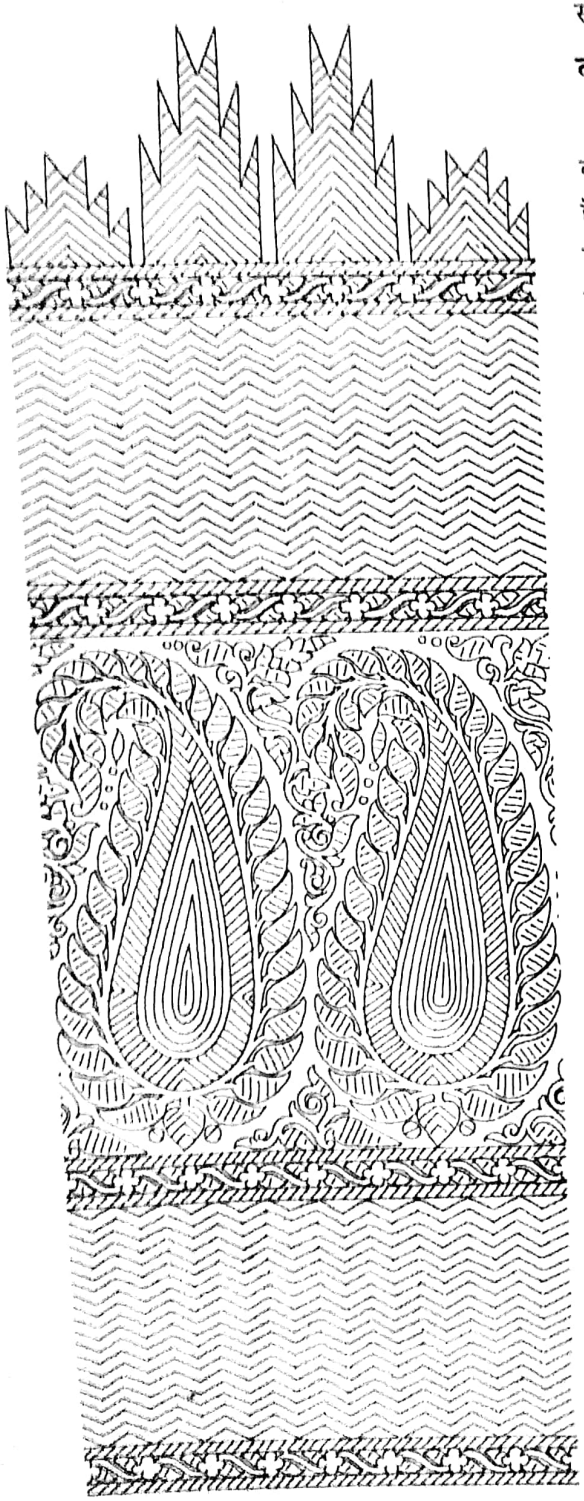

कांचीवरम साड़ियाँ प्रत्येक दक्षिण भारतीय महिला के लिए अपना एक परम्परागत महत्त्व रखती हैं। कांचीवरम साड़ियों ने अपनी मजबूती, गुणवत्ता, खूबसूरती, बुनावट और कम सिकुड़ने की प्रवृत्ति की वजह से बहुत प्रसिद्धि अर्जित की है। यहाँ के बुनकरों को सारे विश्व की बढ़ती हुयी माँग के अनुरूप साड़ियाँ बनानी होती हैं।

कांचीवरम तकनीक :

दक्षिण भारत में वातावरणीय स्थिति सिल्क के लिए अनुकूल है। इसमें कच्चे माल के रूप में मुख्यत: सिल्क और सोने के धागों का प्रयोग होता है। सोने के धागे (जरी) सूरत (गुजरात) से व कच्ची सिल्क बंगलौर एवं मैसूर से मँगवायी जाती है। सिल्क धागों की धुलाई कांचीपुरम के पानी में मिनरल होने से इनमें विशेष चमक आ जाती है। सिल्क पीले एवं हल्के रंग की होती है जिसमें पीला गोंद लगा हुआ होता है फिर सिल्क का गोंद निकालने की प्रक्रिया की जाती है।

दो या तीन सिल्क के धागों को ऐंठन देकर धागा तैयार किया जाता है इसके बाद रंगाई की जाती है। इसमें अधिक ऐंठन वाले धागों का प्रयोग होने से साड़ी मजबूत और वजनी हो जाती है।

रंगे हुये धागे के 18 गज के लम्बे टुकड़े कर दिये जाते हैं जिसमें 9 गज लम्बी दो साड़ी और 6 गज लम्बी तीन साड़ियाँ बुनी जा सकती है। दक्षिण भारत में इन्हें 5 वार और 9 वार साड़ी कहा जाता है। इनके पल्लु 14" से 54" तक के होते हैं और बॉर्डर संकरा ही पसन्द किया जाता है।

बुनाई के लिए तीन शटल का प्रयोग किया जाता है। दो शटल बॉर्डर के लिए और तीसरी शटल का उपयोग मुख्य भाग की बुनाई के लिए होता है। इन साड़ियों में अतिरिक्त ताना-बाना प्रधान होता है। बाने का प्रयोग अंतर्ग्रन्थन (Interlacing) करते हुये बुनाई की जाती है।[5]

इन साड़ियों में पल्लू व बॉर्डर गहरे रंगों और पृष्ठभूमि में विरोधी रंगों जैसे—हरा-बैंगनी, लाल-बैंगनी आदि का संयोजन रहता है। पल्लू में अतिरिक्त बाने की बुनाई द्वारा डिजाइन बुने जाते हैं और बॉर्डर में अतिरिक्त ताने का प्रयोग कर डिजाइन बुने जाते हैं। पल्लू की बुनावट काफी सजावटी होने से साड़ी भारी होती है। 6 गज साड़ी की बुनाई में लगभग 15 दिन का समय लगता है जबकि बुनकर की मदद के लिए अन्य एक आदमी कार्य करता है।

कांचीवरम डिजाइन :

कांचीपुरम साड़ी के डिजाइन प्रकृति से लिये गये हैं व कल्पना पर आधारित होते हैं। इसमें मुख्यत: फूल, कालका, जाली, हाथी, मोर, हिरन, शेर और रूद्राक्ष के साथ लाइन और चैक से अलंकृत किया जाता है।

बुनकर और डिजाइनकर्ता बदलते समय के साथ गति बनाये रखने का प्रयास कर रहे हैं। डिजाइन को ग्राफ पेपर पर तैयार करते हैं और फिर

Scanned by CamScanner

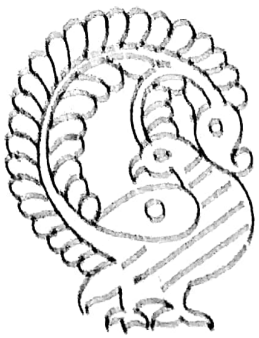

इसे करघे पर बुनाई करने के लिए दे देते है।

बॉर्डर में ज्यामितीय व लाइनों के साथ-साथ रूद्राक्ष, मोप्लापेटू (चौड़े बॉर्डर में दो आड़ी रंगीन लाइन), पनीर सोम्भू (गुलाब जल छिड़कने का बर्तन), कोडिविसिरि (दो लाइनों के बीच फूल बूटा), पोगिडि (त्रिभुज एक या दो लाइनों में), वाकिं (ज्यामितीय डिजाइन), सलन्गई (घुँघरू जैसा डिजाइन), ब्रिक पेट्टू (ईंट बूटा) और पेजली आदि से अलंकृत किया जाता है।[6]

भारी साड़ियों में पृष्ठभूमि पर भी बूटे डाले जाते हैं। मुख्य रूप से इन्हें फूलों व ज्यामितीय आकृतियों से सजाया जाता था। साड़ी की पृष्ठभूमि में बेलधारी (पतली बेल), थुर्थियू (लाइनों में फूल), मृत्थुसीर (लाइनों में मोती), उसिवणम् (बारीक जरी धागे की पट्टियाँ), वझायपू (केले का फूल), मल्लिगई मोगू (चमेली की कली), पवुन (सोने का सिक्का), तारे, कमल और पंचरंगी पट्टियाँ आदि डिजाइन का प्रयोग कर बुनाई की जाती थी। कभी-कभी साड़ी की पृष्ठभूमि टुईल बुनाई द्वारा की जाती है।[7]

कांचीवरम साड़ी में विभिन्न प्रकार के चैक डिजाइन बुने जाते हैं जिनमें मुत्थुकोन्डी (सीधी व आड़ी लाइन), कोट्टडि (बारीक सोने के धागों से विभिन्न प्रकार के चौखाने), पैमाडि (चौखाने), मुत्थुकट्टम (बिन्दुओं द्वारा चैक) आदि प्रमुख हैं। इनके पल्लू विभिन्न पक्षियों, जानवरों एवं लाइनों द्वारा अलंकृत होते हैं।

इन साड़ियों पर उत्तरी भारत व अन्य क्षेत्रों के डिजाइन का भी प्रभाव पड़ा। जिससे नये डिजाइन भी साड़ियों में दिखने लगे हैं। साथ ही साथ पश्चिमी देशों में प्रचलित जैसे साइकिल, वायुयान एवं फूलों के डिजाइन भी साड़ियों में देखने को मिलने लगे हैं।

रंग :

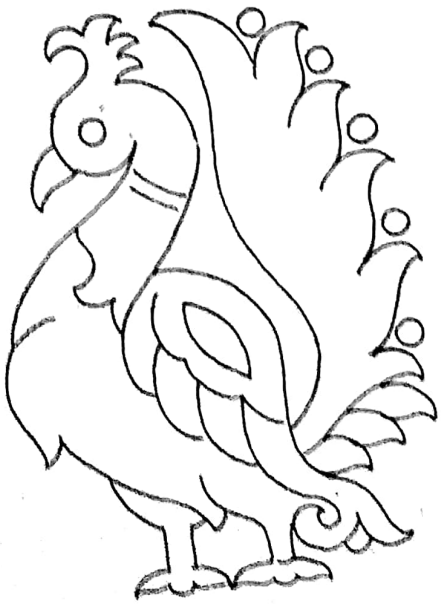

कांचीपुरम सिल्क साड़ियों में ज्यादातर चार-पाँच रंगों का उपयोग किया जाता है। इन साड़ियों में हमेशा चमकदार रंग व जरी के धागे बॉर्डर और पल्लू पर दिखायी देते हैं। इन साड़ियों का मुख्य आकर्षण इनका विरोधी रंग का पल्लू होता है। इसी कारण दक्षिण भारत की साड़ियाँ अन्य साड़ियों से अलग पहचान रखती हैं।

पूर्व में यहाँ प्राकृतिक रंगों से रंगाई की जाती थी। पीले रंग के लिए केसर जड़ की पाउडर से, गहरा नीला इंडिगो से, हरे रंग के लिए पहले इंडिगो फिर केसर के पानी में डालकर हरा रंग और बैंगनी रंग कोचिनल और इंडिगो से मिलता है। इन रंगों को पक्का करने के लिए रंगबन्धक का प्रयोग किया जाता है। रंगबन्धक के रूप में तगारा पौधे के बीज, चूना, फिटकरी, सीसम का तैल, हरड़ा पौधे के पत्ते आदि का प्रयोग करते थे।[8]

कालान्तर में इन साड़ियों में पारम्परिक और नये रंगों को साथ-साथ रख कर नये रंग संयोजन बनाये जाने लगे, जिनमें म्यल्कनाथू (मोर गर्दन जैसा नीला), कृष्ण मेघवर्णनम (गहरा नीला), माम्तूलिर (कच्चा आम का

Scanned by CamScanner

फूल-लाल), अनन्दा नीला (नीला) और प्यासी गुलाबी आदि ज्यादा प्रचलित हैं।[9]

दक्षिण भारतीय साड़ियों के साथ-साथ कांचीवरम साड़ी पर फिल्म जगत का भी प्रभाव पड़ा। इसीलिए चटकीले और विरोधी रंगों की अधिकता देखने को मिलती है।

लाल रंग (अरक्कू) की साड़ी नववधूं के लिए, पीला और हरा रंग मंगल कार्यों के लिए शुभ होता है। जबकि काले रंग को अशुभ माना जाता है। आजकल माँग के अनुरूप अन्य रंगों का भी प्रयोग होने लगा है।[10]

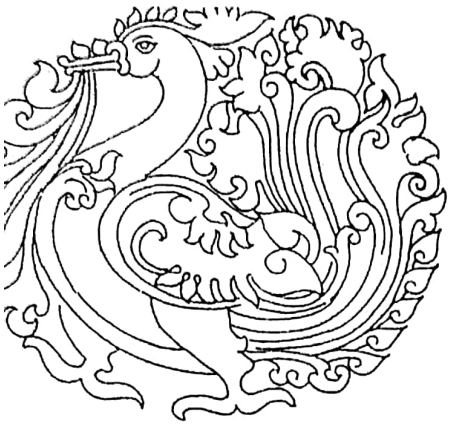

इन साड़ियों को शादी-विवाह, सतमासा, नामकरण, होली, दीपावली और पोंगल आदि पर्वों पर पहना जाता है। इन साड़ियों की धुलाई घर पर ही कर ली जाती है।

कांचीवरम साड़ी की कुछ विशेषताएँ हैं जो इसे अन्य साड़ियों से अलग पहचान देती हैं। जैसे विरोधी रंग का पल्लू पृष्ठभूमि से, गठी बुनाई, सोने के धागे (जरी) का प्रयोग लाइन या चैक में और आकर्षक डिजाइन आदि।

कांचीपुरम की कुछ साड़ियाँ विशेष डिजाइन के लिये प्रसिद्ध हैं जो कि निम्न हैं—

मुब्भागम—इस साड़ी में पास-पास बराबर दूरी पर तीन लाइनें होती हैं। पल्लू दोनों तरफ बराबर और गहरे रंग का होता है।

सिम्हासना—इस साड़ी की बुनाई के लिए पूरे डिजाइन में सोने के धागों से भारी बॉर्डर व पल्लू (48"-52") होता है जिसमें मैसूर का प्रतीक चिह्न 'दो सिर वाला पक्षी' डिजाइन बुना जाता है।

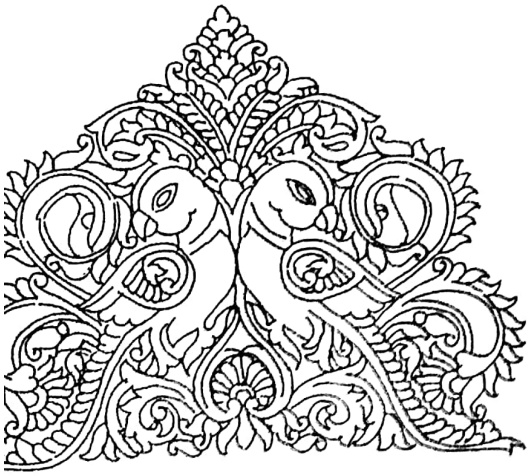

कोनार्ड कोट्टणि—तंजावर की साड़ी में सिल्क का प्रयोग ताना और बाने में होता है। बॉर्डर में सजावटी लेस व पृष्ठभूमि में चौखाने होते हैं।

सुमंगली प्रार्थना—इस साड़ी की बुनाई में सिल्क के धागों का प्रयोग होता है। इसमें काले रंग का धागा नहीं लिया जाता, क्योंकि काला रंग अशुभ माना जाता है।

पूजा—इन साड़ियों का प्रयोग धार्मिक त्यौहारों पर किया जाता है। जिसमें लाल रंग (अरक्कू) व सोने की जरी का अधिक प्रयोग किया जाता है। आजकल फैशन के अनुसार ये अन्य रंगों में भी बुनी जाने लगी हैं।

टैम्पल—तमिलनाडु के मन्दिरों में सिल्क साड़ी चढ़ाने का प्रचलन है। इन साड़ियों में विशेष डिजाइन, रंग, आकार और कीमत निर्धारित नहीं होती है। इन साड़ियों को समय-समय पर श्रद्धालुओं के मध्य नीलाम कर दिया जाता है जहाँ से ये प्रसादस्वरूप भक्तजनों तक पहुँचती है। वास्तव में इन्हें टैम्पल साड़ी के नाम से जाना जाता है जबकि टैम्पल साड़ी में पारम्परिक डिजाइन बने होते हैं। साधारणतया बॉर्डर में रुद्राक्ष बूटा और टैम्पल डिजाइन बुना होता है व पृष्ठभूमि में चैक डिजाइन होता है। टैम्पल डिजाइन के कारण ही इसे टैम्पल साड़ी कहा जाता है।[11]

Scanned by CamScanner

कलमकारी शब्द पर्सिया से उत्पन्न हुआ कलमकारी दो शब्दो से मिलकर बना है कलम एवं कारी।

कलम — Brush, pen

कारी — कारीगरी

पुर्तगाल के लोगो मे इन्हें Pintado cloth कहते है इंग्लिश लोग इसे Chitz cloth कहते थे। 18th mid period से इसे कलमकारी नाम से जाना जाता है।

Colors → कलमकारी मे religious colours use किये जाते है जैसे - god figure मे Blue, simple female character मे golden yellow व दैत्य वाले figure को red colour से प्रदर्शित करते थे। कपड़े को दूध मे Dip कर दिया जाता है जिससे रंग फैले नही।

red, Pink, Black, purple

Motif → रामायण काल के दृश्य, महाभारत के दृश्य, Tree of Life

(3) Carpet → कालीन शब्द का प्रचलन प्राचीन ईरान से भारत आया। भारत मे कालीन बुनाई ईरानी कारीगरो द्वारा सिखायी गयी, परन्तु भारतीय कालीन का डिजाइन व बुनने का तरीका अपने आप मे मौलिक है, जो अन्य देशो की तकनीक से भिन्नता लिये हुये है।

धागा व रंग → carpet मुख्यत: सूती व ऊनी धागो से बनाये जाते है, लेकिन कुछ स्थानो पर velvate का भी प्रयोग किया जाता है। भारतीय कालीन कालीन मे लाल रंग का प्रयोग अधिकांशत: ground मे करते है। डिजाइन मे सामान्यत: हल्का लाल, हल्का नीला, हरा, नारंगी एवं कत्थई रंगो का प्रयोग किया जाता है।

Scanned by CamScanner

1. Write a short note on following :

(1) Kashmiri shawl (कश्मीरी शॉल)

(2) Kalamkari (कलमकारी)

(3) Carpet (गलीचा)

Q2. Kashmiri shawl →

कश्मीरी शॉल उद्योग का श्रेय जैन - उल - अबिदिन शासक को जाता है जिसे कश्मीर का अकबर भी कहा जाता है इसके द्वारा बुनकरो को पर्शिया और समरकन्द से लाकर बसाया गया, जिससे इस तकनीक मे पर्शिया और मध्य एशिया का प्रभाव दिखाई देता है।

तकनीक :- कश्मीरी शॉल के लिये एशियन पर्वतीय जंगली बकरी से ऊन प्राप्त की जाती है जिसे कच्चा हिरकस कहते है। लद्दाख की ऊँची पर्वत माला वाले क्षेत्रो से बकरी के रोएँ को इकट्ठा कर श्रीनगर लाया जाता है जहाँ महिलाऐ कताई कर बारीक धागा तैयार करती है जो हल्का, गर्म और क्रीमी

Design & Motif →

Birds मे → कठफोवडा, किंगफिशर, तोता

Floral → कमल, ट्युलिप

Fruit → अंगूर, बदाम,

Trees → वृक्षो मे चिनार के ही विभिन्न रूपो को

Colors → yellow, white, Black, Blue, लाल, Grey

Scanned by CamScanner